अभियान

MUST बोल अभियान

ध्रुव अरोड़ा

लगभग 90 प्रतिशत पुरुषों का मानना है कि "मर्दानगी शारीरिक बल, स्टाइल, तनाव सहने की क्षमता, शारीरिक श्रम, आज़ादी, प्रतिष्ठा, नियंत्रण, अपने देश के गौरव के लिए लड़ने, आत्म संयम, यौन सक्रियता, अपने साथी को यौन संतुष्टि प्रदान करने की क्षमता, पैसा कमाने व संतान पैदा करने की योग्यता, मजलूमों-गरीबों तथा परिवार मुख्यतः औरतों की सुरक्षा करने की क़ाबलियत द्वारा परिभाषित की जाती है।

स्रोतः "नाज" द्वारा मर्दानगी पर किए गए शोध से प्राप्त जानकारी

मर्दानगी को परिभाषित करने वाले इन अति महत्वपूर्ण मानकों को देखते हुए इसमें कोई हैरानी की बात नहीं है कि अधिकांश पुरुष अपने जीवन का अहम हिस्सा इन उम्मीदों पर खरा उतरने में गवां देते हैं। पर यह परिभाषा हमें कुछ खास सवालों पर सोचने को भी बाध्य कर देती है- उन लोगों का क्या जो मर्दानगी के इस नियत वर्गीकरण में फिट नहीं बैठते? तो फिर कौन से व्यवहार 'मर्दाने' नहीं कहे जाएंगे? क्या हम अलग व्यवहार करने वाले मर्द नहीं हैं?

अगर इन सभी सवालों का जवाब 'न' में है तो फिर ऐसा क्यों है कि कुछ खास किस्मों की मर्दानगी को ही खरा माना जाता है? मर्द बनने की चाह में युवा जिस तनाव-बोझ से गुज़रते हैं वह बिल्कुल मूर्खतापूर्ण है। इस प्रयास में अक्सर हम अपने को मर्दानगी के इन नियत मापदंडों से अलग पाते हैं और खुद को 'नार्मल' बनाने की भरसक कोशिश में लगे रहते हैं।

युवाओं के साथ पिछले तीन वर्ष के अपने काम के दौरान मैं एक सच्चाई से वाकिफ़ हुआ हूं- मर्दानगी को लेकर उनकी सोच इतनी दकियानूसी नहीं है। हम सहज ही मान लेते हैं क यह खुली मानसिकता शिक्षा के कारण है और आज का युवा इन पूर्वाग्रहों से ग्रस्त नहीं है। पर बौखला देने वाली सच्चाई तो यह है कि मर्दानगी के ये

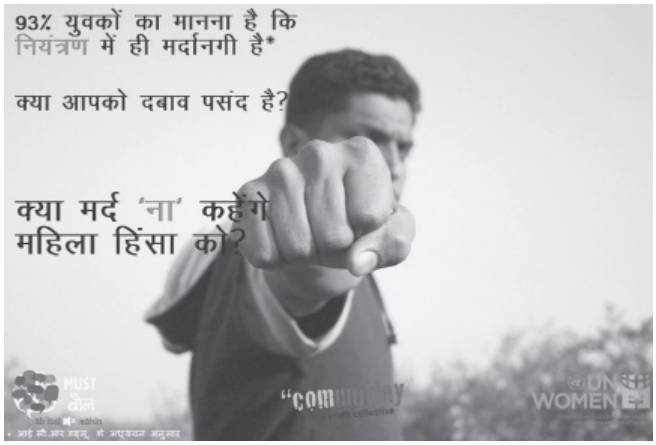

फ़ोटोः MUST बोल अभियान

पूर्वाग्रह इतने अधिक गहरे पैठे हैं कि हम उन्हें अब पूर्वाग्रह भी नहीं मानते- ये तो बस "ऐसे ही होते हैं।"

'MUST बोल अभियान' इन सभी मुद्दों को सम्बोधित करने के लिए युवाओं के साथ एक ऑन-लाइन अभियान से जुड़ा है। फेसबुक पर एक पेज-लेट्स टॉक (आओ बातें करें) के ज़रिए ये युवाओं से सम्पर्क बनाए रखता है। हमारे दिमाग में 'असली मर्द' की परिभाषा इतनी स्पष्ट होती है कि हम किसी दूसरी तरह के 'मर्द' की कल्पना भी नहीं कर पाते। अधिकांश युवा वर्ग इसी असली मर्दानगी को ग्रहण करने की कोशिश में जुटा है क्योंकि उनके हिसाब से यही मर्दानगी उन्हें 'असली' मर्द बनाती है। और यह समस्या लड़के व लड़कियों दोनों में पाई जाती है- लड़कियां

फ़ोटो: MUST बोल अभियान

भी लड़कों को घर का "असली मर्द" बनने के लिए जबरन धकेलती जाती हैं। अफ़सोस यह है कि यह सब एक अच्छी मंशा से किया जाता है पर ये लिंग विभाजित भूमिकांए समाज में हमारे व्यवहार और असमानताओं का आधार बनती हैं।

आम जीवन की सच्चाई तो यह है कि मर्दानगी की इस पारंम्परिक छवि को मिटाने के लिए इस मुद्दों पर युवाओं से बातचीत करना ज़रूरी है जिससे खामोशी से इन रूढ़िवादी मान्यताओं को अंगीकृत करने वाले नैतिक मूल्यों को बढ़ावा न मिले। इसके मायने हैं कि हमारे कल को इस रूढ़िवादिता से आज़ाद करने और एक निश्चित सामाजिक छवि को कायम रखने के सामाजिक दबाव से उबारने में युवाओं की भूमिका अहम है।

युवाओं से बातचीत के दौरान मेरा अनुभव रहा है कि काफी लोग यह मानते हैं कि मर्दानगी का उल्टा होता है ज़नानापन- एक दूसरी पारम्परिक छवि जिसमें 'मर्द' की एक खास पहचान होती है। इसके अलावा वे मानते हैं कि मर्दानगी का अर्थ है मर्द बनना और पुरुष होने के नाते उनको एक खास तरह से जीना व व्यवहार करना आवश्यक है- इससे अलग किसी भी छवि को वे नहीं स्वीकारते। विडम्बना यह है कि मर्दानगी के इन मानको का अनुसरण करने वाले यही युवा इससे त्रस्त भी हैं- उन्हें मर्द बनने के लिए निरन्तर संघर्ष करना पड़ता है।

मर्दानगी के ये मानक अनेक स्रोतों व तरीकों से हमें सिखाये जाते हैं- मीडिया, फ़िल्म, विज्ञापन, संस्कृति, रिवाज व समाज। एक 'परफेक्ट' मर्द की घिसी पिटी तस्वीर अनगित तरीकों से हमारे सामने पेश की जाती है। हमसे इन उम्मीदों पर पूरा उतरने की अपेक्षा की जाती है। फिर चाहे हम उन विज्ञापनों की बात करें जिनमें दर्शाया जाता है कि कौन सी विशेष ब्रांड के कपड़े हमें एक लड़की के सम्मान की सुरक्षा करने का हौसला देते हैं; अनेकों गोरापन बढ़ाने वाली क्रीमें जो एक विशेष तरह के मर्द की छवि को बढ़ावा देती हैं; या एक परिपूर्ण मर्द की छवि को पुख्ता बनाने वाले सूटिंग के विज्ञापन- सभी हमारी असुरक्षा को बढ़ाते हुए यह संदेश देते हैं कि इन खाकों में सटीक बैठने वाले ही 'असली मर्द' कहलाने का दम रखते हैं। इन पैमानों से बाहर रहने वाले इस सूची में नहीं आते।

फ़ोटो: MUST बोल अभियान

इस समस्या से निजात पाने का एक ही उपाय है- युवा इस रूढ़िवादिता का सामना करें और इस कसौटी पर खरा उतरने की ज़िद छोड़कर रोज़ाना सामने धकेली जाने वाली छवियों को मानने से स्पष्ट इंकार कर दें। तभी ये दुनिया ऐसे युवकों की होगी जहां सबकी अपनी खास अलग पहचान, व्यक्तित्व व मर्दानगी होगी। और इसके लिए बेहद ज़रूरी है कि युवा वर्ग समस्या को पहचाने और आने वाली पीढ़ी होने की ज़िम्मेदारी उठाते हुए आगे बढ़े।

ध्रुव अरोड़ा *MUST बोल अभियान के साथ जुड़े हैं।*
अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें
www.mustbol.in